# एड्स

## तथ्य और मिथ्य

निशी वधवा
डा० बी० एस चवन

एड्स रोकथाम का अर्थ है - आत्मरक्षा

एड्स का पूरा अर्थ इस प्रकार है : -

ए : ऐक्वायर्ड "प्राप्त किया हुआ"
आई : इम्युनो "शरीर की रोगो से लड़ने की क्षमता।"
डी : डैफिसिएँसी "कमी"
एस : सिन्ड्रोम-"लक्षणों का समूह।"

एड्स क्या बिमारी है

१. यह एक ऐसा रोग है जो कि एच० आई० वी० वायरस द्वारा फैलता है या होता है।

२. इस रोग में रोगी के शरीर की रोगों से लड़ने की क्षमता धीरे-धीरे समाप्त हो जाती है जैसे.

हमारे शरीर में कई तरह के सिस्टम होते हैं जोकि हमारे शरीर को चलाने में मदद करते हैं। यह जीवाणु (एच०आई०वी०) उन सिस्टम पर हॉवी हो जाता है जिससे उनकी बाहर से प्रवेश करने वाले जीवाणुओं से लड़ने की क्षमता समाप्त हो जाती है और इस तरह एड्स रोगी को कई तरह के संक्रमण हो जाते हैं और तरह-तरह की बीमारियाँ लग जाती हैं। तथा वह ऐसे साधारण रोगों का भी मुकाबला नहीं कर पाता जिनसे स्वस्थ साधारण मनुष्यों को कोई नुकसान नहीं होता हैं। आखिरकार यही बीमारियाँ रोगी की मृत्यु का कारण बन जाती हैं।

३. आज तक इस बीमारी का कोई टीका, दवा व इलाज नहीं है।

४. आम रोगों की तरह एड्स से बीमार व्यक्ति भी देखने में सामान्य लगते हैं।

एच० आई० वी० के द्वारा संक्रामक होने के बाद भी कई वर्षों तक यह ग्रस्त व्यक्ति के शरीर में सुस्त, निश्चल अवस्था में रहता है तथा ग्रस्त व्यक्ति को इसकी उपस्थिति का पता ही नहीं चलता। देखने में वह व्यक्ति सामान्य व्यक्ति ही लगता है। इस निश्चल अवस्था में भी यह वायरस संक्रामित व्यक्ति से अन्य असंक्रामित व्यक्तियों में विभिन्न माध्यमों से संचारित हो सकता है। एक अन्य विशेषता यह भी है कि इस वायरस का संक्रामण जन्म भर रहता है।

वायरस क्या होता है ?

वायरस (विषाणु) अत्यन्त सूक्ष्म, बीमारी पैदा करने वाले जीव हैं जिन्हें केवल अत्यन्त शक्तिशाली सूक्ष्मदर्शी यंत्रों से ही देख जा सकता है। छोटी चेचक, पोलियो, फ्लू जैसी बीमारियाँ वायरस के द्वारा ही होती हैं। एड्स रोग भी वायरस के द्वारा होता है।

कुछ परिभाषिक शब्द

पी० जी० एल : परसिस्टेंट जनरलाइज्ड लिफैडेनोपैथी जिसके अन्तर्गत लिम्फ नोड (लसिका पर्व) में सूजन या गिलटियाँ निकल जाती हैं।

ई० एल० आई. एस० ए० : एन्ज़ाइम लिंक्ड इम्मयुनो सोरबेंट एसे । यह एक परिक्षण है जिसे 'एलिसा' कहते हैं।

ए० आर० सी० : एड्स रिलेटैड (एड्स से जुड़ा हुआ) काम्पलैक्स यानि कि एड्स से जुड़े हुए लक्षण चिन्ह जो किसी ऐसे व्यक्ति से प्रकट होते हैं जो एच० आई० वी० से ग्रसित हैं।

टी० सैल : सफेद रक्तगण जो थाइमस ग्लैंड से परिपक्व होते हैं। टी० सैल दो प्रकार के होते हैं - सहायक (हैल्पर) और अवरोधक (सप्रैसर) एड्स में सहायक सैल की कमी हो जाती है जोकि एन्टीबोडीस बनाने में काम आते हैं।

एच० आई० वी० क्या है ? : ह्यूमन इम्मयुनो डैफिसियन्सी वायरस (एच० आई० वी०) एड्स रोग का कारण है। इस वायरस के शरीर में प्रवेश करने के बाद रोगी में रोगों से लड़ने की क्षमता धीरे-धीरे समाप्त हो जाती है। तथा वह ऐसे साधारण रोगों का भी मुकाबला नहीं कर पाता जिनसे स्वस्थ साधारण मनुष्यों का कोई नुकसान नहीं होता है।

एड्स का कारण

१. एड्स का कारण है : एच० आई० वी० नामक एक खतरनाक कीटाणु !

२. यदि किसी व्यक्ति के शरीर में एच० आई० वी० कीटाणु पाया जाता है तो इसका मतलब यह हरगिज नहीं है कि उसे एड्स है। हाँ वैज्ञानिकों का मत है जिसे एच० आई० वी० संक्रामण है उसे आखिरकार एड्स हो जाती है।

एड्स कैसे फैलती है

*१. शारीरिक यौन सम्बन्धों (सम्भोग) द्वारा :* एड्स का कारण है एच० आई० वी० नाम का कीटाणु , जो आमतौर से यौन सम्पर्कों से फैलता है। यह व्यक्ति जिसे एच० आई० वी० संक्रामण है इस कीटाणु को यौन सम्पर्कों से अन्य लोगों तक पहुंचा सकता है। दूसरों को एच० आई० वी० पहुँचाने के बाद भी उनमें यह संक्रामण बरकरार रहता है।

स्त्री हो या पुरुष एड्स का हमला किसी पर भी हो सकता, एच० आई० वी० कीटाणु यौन सम्पर्क के साथ पुरुष से स्त्री में स्त्री से पुरुष में तथा पुरुष में से पुरुष में आसानी से फैलता रहता है।

*२. संक्रमित रक्त या रक्त पदार्थों के चढ़वाने से :* एड्स उन लोगो को भी हो सकता है जिन्हें रक्त या रक्त से बने अन्य उत्पादों को इलाज के रुप में कभी लेने की आवश्यकता पड़ी हो।

एच० आई० वी० कीटाणु रक्त द्वारा भी फैल सकता है, जब एच० आई० वी० धारक व्यक्ति का रक्त किसी अन्य व्यक्ति के शरीर में चढ़ा दिया

*श्रीपति निशी वधवा नर्सिंग सिस्टर और डा० बी० एस० चवन एडस उपचार केन्द्र, दीन दयाल उपाध्याय अस्पताल, नई दिल्ली, में नियुक्त हैं।*

जाए। (रक्त चढ़ाने से)।

अकसर यह देखा गया है कि जो व्यक्ति नशा करते हैं वह अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए या नशा करने के लिए दान देते हैं उस समय उन्हें यह पता नहीं होता है कि उनको एड्स है या उनके रक्त में एड्स के कीटाणु उपस्थित हैं और वह रक्तदान कर देता है।

बार-बार रक्त दान करने से व्यक्ति में कमजोरी आ जाती है और अच्छी खुराक न मिलने पर व्यक्ति के शरीर में कई तरह के संक्रामण रोग हो जाते हैं और उनके शरीर में अन्य रोगों से लड़ने की क्षमता कम हो जाती है। क्योंकि यह वायरस की शरीर की लिम्फोटिक तंत्र में जो कि शारीरिक प्रतिरक्षा तंत्र की, किसी भी संक्रामक रोग के विरूद्ध हमारी प्रमुख शक्ति है। शरीर की प्राकृतिक सुरक्षा प्रणाली में पड़ी यह दरार सफेद रक्तकणों को तहस नहस कर देती है जिससे व्यक्ति में दूसरे कीटाणुओं से लड़ने की क्षमता कम हो जाती है और इससे बचाव का साधन व्यक्ति के लिए कोई नहीं होता।

३. *दूषित सूई या इन्जैक्शन का इस्तमाल* : अ. मादक द्रव्यों का प्रयोग करने वाले व्यक्ति अगर एच० आई० वी० प्रदूषित सुईयों का प्रयोग करे। ब. इंट्रावीनस इन्जैक्शन लेने वालों को सुई के द्वारा विशेष तौर पर उन लोगों को जो नशीली दवाओं का सेवन एक ही सुई के माध्यम से करते रहे हों। स. यदि चिकित्सा उपकरणों को सही ढंग से साफ तथा कीटाणु रहित न किया जाये तो एच० आई० वी० कीटाणु उनके द्वारा फैल सकते हैं। द. त्वचा को छीलने/काटने वाले नुकीले, तेज धार उपकरणों (जैसे उस्तरा, कान छेदने तथा गोदने वाले औजार) को यदि सही तरीके से साफ व कीटाणुरहित न किया जाये तो एच० आई० वी० फैल सकता है।

अक्सर देखने को मिलता है कि जो व्यक्ति मादक द्रव्यों का सेवन करते हैं वा नशीली दवाओं को जैसे हैरोइन और दूसरे इन्जैक्शन को आपस में बांट कर लगाते हैं। या एक ही सीरिंज व सुई इस्तेमाल करते हैं। जब वो एक दूसरे की सुई का इस्तेमाल करते हैं तब उन्हें यह मालूम नहीं होता कि इससे यह खतरनाक बीमारी लग सकती है। दूसरा त्वचा को छीलने या काटने वाले नुकीले, तेज धार वाले उपकरणों जैसे - उस्तरा, कान छेदने वाली सुई आदि को यदि किसी कीटाणुरहित एन्टीसैप्टिक लोशन से साफ नहीं किया गया हो। क्योंकि किसी व्यक्ति का तो पता नहीं होता कि उसे यह संक्रामक रोग है।

आजकल हर जगह पर (या कोने-कोने पर) डाक्टरों की दुकानें हैं जिनके पास सरकार की तरफ से डाक्टरी डिग्री प्राप्त नहीं है जैसे कम्पाउंडर। कभी-कभी पैसे की कमी से या चीजें ठीक से उपलब्ध न होने से वह एक ही सीरिंज और सुई का प्रयोग एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में कर देते हैं। अपना तो वह फायदा कर लेते हैं पर दूसरे को एक खतरनाक बीमारी का रूप दे सकते हैं।

४ *संक्रमित माता के द्वारा नवजात शिशु को* : एच० आई० वी० संक्रामण से पीड़ित गर्भवती मां में से ये कीटाणु उसके बच्चे में फैल सकता है। एक गर्भवती महिला जिसके शरीर में एच० आई० वी. है, गर्भावस्था के दौरान या जन्म के समय इसे अपने बच्चे में फैला सकती है। एच० आई० वी० से पीड़ित हर एक गर्भवती महिलाओं में से किसी एक के बच्चे में एच० आई० वी० संक्रामण पाया गया है। ये बच्चे अक्सर दो साल से भी कम समय तक जीवित रह जाते हैं। एड्स ग्रसित मां के स्तनपान से भी शिशु को यह रोग हो सकता है।

जैसे

यह रोग अधिकतर उन महिलाओं में देखा जाता है जो एक से अधिक आदमियों से शारीरिक सम्बन्ध रखती हैं। उनको पता नहीं चलता कि किससे यह रोग लिया गया हैं। फिर वह गर्भवती होने के समय यह संक्रामक रोग अपने आदमी को और फिर अपने बच्चे को दे देती है। जिससे एक ही व्यक्ति से दो व्यक्ति शिकार होते हैं। फिर आगे उससे और फिर और। इस तरह यह रोग धीरे-धीरे कई व्यक्तियों में फैल जाता है।

५. *कुछ अन्य रोगों से ग्रसित रोगी जैसे* : पक्ष्मा, मलेरिया, कुपोषण, सिकल सैल, लौह तत्व की कमी से रक्त लापता, स्त्रियों का जल्दी गर्भवती हो जाना एवं स्वछंद संभोग की जीवन पद्धति आदि ऐसे घटक हैं जिनमें रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है जैसे की अफ्रीका में आमतौर पर देखा गया है इससे भी एड्स फैल सकती है।

६. यह उन स्वास्थ कार्यकर्त्ताओं को भी हो सकता है जिन्होंने एड्स रोगी की देखभाल की हो एवं अपने बचाव हेतु पूरी सावधानी नहीं बरती।

७. पर्याप्त सावधानी के अभाव में योनि में रखे जाने वाले गर्भ निरोधक उपायों द्वारा योनि में चोट पहुँचने एवं बाद में एच० आई० वी० द्वारा संक्रामक हो जाने की सम्भावना से भी इन्कार नहीं किया जा सकता।

**एड्स बिषाणु का वास्तविक प्रभाव**

एड्स रोग एक रिट्रोवायरस द्वारा होता है जोकि अपने आपको रोगी के लोशिका संरचना में स्थापित कर अन्दर ही अन्दर उस लिम्फैटिक संरचना को नष्ट कर देता है। यह रोग फैलाने वाले एड्स वायरस को लिम्फैटिक तंत्र में उपस्थिति विशेष तौर पर टी० - ४ कोशिकाओं में जो कि शारीरिक प्रतिरक्षा तंत्र की किसी भी संक्रामक रोग के विरुद्ध हमारी प्रमुख शक्ति है। शरीर की प्राकृतिक सुरक्षा प्रणाली में पड़ी यह दरार सफेद रक्तकणों को तहस नहस कर देती हैं। जिससे रोगी के शरीर में अन्य कई रोगों का प्रवेश हो जाता है जिससे रोगी के बचाव का कोई साधन नहीं रह जाता। दूसरा ऐसी अवस्था में रोगी को दी जाने वाली दवाएँ इतनी तेज होती है कि प्राकृतिक सुरक्षा प्रणाली को नष्ट करने में कसर नहीं छोड़ती। इससे रोगी में सफेद कणों की कमी हो जाती है और अन्य संक्रामक रोगों के होने का भय रहता है।

किसी हद तक एड्स की तुलना रक्त कैंसर से की जा सकती है क्योंकि दोनों ही बीमारियों से शरीर की सुरक्षा प्रणाली नष्ट होती है अन्तर सिर्फ इतना ही है कि एड्स से क्रांमक बीमारी है परन्तु रक्त कैंसर नही।

*एड्स किसे हो सकती है*

एड्स सिर्फ वैश्याओं और उनके ग्राहकों की ही समस्या नहीं है। हर उस व्यक्ति को जिसके कई अलग अलग लोगों से यौन सम्बन्ध हैं, उसे एच० आई० वी० संक्रामण का बहुत ज्यादा खतरा है। यदि आप कभी-कभार या एकाध बार ही ऐसा यौन सम्बन्ध करते हैं तो एच० आई० वी० संक्रामण की पूरी संभावना है। वे लोग जिन्हें सिफिलिस या शेंक्रइड जैसे घाव या रिसने वाले यौन रोग हैं। ऐसे में बहुत आसान हैं कि एच० आई० वी० लिंग के माध्यम से सामान्य, स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में घुस जाये (बेशक यह घाव छोटा ही क्यों न हों)।

*एच० आई० वी० संक्रामण का शरीर पर क्या असर होता है*: प्रारम्भिक अवस्था में एच० आई० वी० संक्रामण वाले व्यक्ति भले चंगे दिखाई देते हैं, उन्हें नहीं मालूम होता कि उनके शरीर में एच० आई० वी० प्रवेश कर चुका है लेकिन वे इस संक्रामण को औरों में फैलाने के पूरी तरह योग्य होते हैं। ऐसे लोगों को "एच० आई० वी० पोजिटिव व्यक्ति" कहा जाता है।

*एड्स के मुख्य लक्षण क्या है* : ७ से १० साल बाद अधिकांश "एच० आई० वी० पोजिटिव व्यक्ति" बीमार हो जाते हैं। उनमें उन्हें कुछ इस तरह के लक्षण दिखाई पड़ते हैं : १. लगातार कई-कई हफ्ते बुखार

रहना। २. गले या बगल में सूजन भरी गिल्टियों का हो जाना। ३. सिर में दर्द गले में दर्द। ४. लगातार कई-कई हफ्ते तक पेचिस/दस्त का रहना। ५. हफ्तों तक दर्द भरी खाँसी का होना। ६. भूख न लगना। ७. वजन का लगातार कम होना। ८. मुँह में घाव हो जाना। ९. निमोनिया की शिकायत। १०. प्लीहा (स्प्लीन) में सूजन होना। ११. दुखदायी फुंसियां और खुजली वाले ददोरे। १२. चकते हो जाना विशेष तौर पर पैरों में। १३. केपोसिस का सारकोमा यह त्वचा का विलक्षण कैंसर है जिसका प्रभाव रक्त पर एवं लिम्फ ले जाने वाली वाहिकाओं पर भी पड़ता है। १४. दंत चिकित्सक भी निम्नलिखित कुछ लक्षणों द्वारा इस रोग का पता प्रारम्भिक अवस्था में ही लगाने में मदद कर सकते हैं। केन्डीड़ासिस फफूंदी का संक्रमण जो त्वचा, मुंह के अंदर, श्वसन तंत्र में होता है। हेअरी ल्युकोप्लेकिया गालों से ठोड़ी तक त्वचा पर पाए जाने वाले सफेद धब्बे जो कभी-कभी मेलिगलेंट भी हो सकते हैं। हरपेस यह वायरस के द्वारा उत्पन्न फुंसियां जिनमें द्रव भरा होता है। यह त्वचा पर और बहुधा होंठों पर होती हैं एवं रोगी को बुखार रहता है। जीरोस्टोमिया इसमें मुंह सूज जाता है जो मुंह के द्रव उत्पादों के न होने के कारण होता है। १५. कभी-कभी मसूड़ों में घाव हो जाते हैं एवं रक्त पहुंचना बन्द हो जाता है इसलिए निर्वीवीकरण की प्रक्रिया इन घावों मे शुरू हो जाती है। मुख्यत: इसका प्रभाव समलैगी पुरुषों एवं स्त्री पुरुष दोनों से शारीरिक सम्बंध रखने वाले पुरुषों में पाया जाता है। १६. न्यूरोलाजिकल समस्याएं जैसे अंगों से काम लेने में बाधा, यादाश्त की कमजोरी, हाथों में कम्पन्न एवं अभिव्यक्ति के माध्यमों बोलने एवे लिखने आदि में समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं। अंतिम दौर में बौद्धिक कार्य में रुकावट (डिमेंशिया) बोलने में रुकावट (म्यूटिजम), बिस्तर पर ही मल मूत्र हो जाना, दिखने में बाधा, कमर के नीचे अंगों का सुन्न पड़ जाना आदि भी हो सकते हैं। १७. कई तरह की बीमारियां तथा उनका ठीक न हो पाना।

*अब तक एड्स वायरस शरीर के निम्नलिखित ऊतकों में प्राप्त किया गया है।* परिधि में पाये जाने वाले रक्त में (पैरीफेरल ब्लड)। शरीर में पाई जाने वाली ग्रंथि लसिका पर्व में जिनमें शरीर का पंछा (रंगविहीन द्रव) पाया जाता है। मस्तिष्क के ऊतकों में (ब्रेन टिशू में)। रीढ़ की हड्डी में पाये जाने वाले द्रव में। (सेरीब्रोस्पाइनल फ्लुड्स में)। आंसू में (टियर्स में) अस्थि मज्जा में (ब्रोन मेरो में) कोशिकाविहीन रक्त के द्रव में (सेल फ्री प्लाज्मा में) वीर्य में (सीमन में)। रोगी मां के दूध में। रोगी व्यक्ति के पेशाब में। रोगी की थूक/लार में (स्लाइबा में)। स्त्री रोगी के योनि द्रव में।

उपरोक्त जानकारी से हमें एड्स के फैलने के माध्यमों का पता चला है। उचित सावधानी एवं बचाव हेतु यह आवश्यक है।

## एड्स रोगी की पहचान व निदान

उपरोक्तलिखित लक्षणों की उपस्थिति का अर्थ यह नहीं है कि व्यक्ति को एड्स है ही। ये लक्षण कुछ अन्य रोग जैसे तपेदिक में भी हो सकते हैं।

*इस रोग का निदान निम्नलिखित टैस्टों द्वारा किया जाता है:* १. डाट एलिस एवं एग्लुटिनेशन आफ पारटिकल्स विधियां या जांच २. बेस्टर्न ब्लॉट टेस्ट/इम्युनोढलाट ३. एल० ए० वी० (लिम्फेडेनोपेथी वायरस तथा एच० टी० एल० वी०) (ह्यूमन इम्युनोडेफिशिएन्सी) वायरस। अगर यह रक्त में तृतीय एंटीबाड़ी उपस्थित है तो उस उस व्यक्ति को रक्तदान देने के लिए रोक दिया जाता है। ४. पी० सी० आर० (पालीमरेज चेन रिएक्शन) इस विधि द्वारा यह सम्भव है कि यदि करोड़ों में से एक भी कोशिका वायरस ग्रसित है तो उसका पता चल सकता है। यह टैस्ट आजकल बहुत से अस्पतालों में उपलब्ध हैं।

*एड्स इनसे नहीं होता/ या एड्स इन माध्यमों से नहीं फैलता :* १. साधारण सम्पर्क। २. किसी संक्रमित व्यक्ति के पास उठने बैठने से। ३. संक्रमित व्यक्ति से हाथ मिलाने से। ४. मच्छरों, मक्खियों तथा खटमलों के काटने से यह रोग नहीं फैलता। ५. संक्रमित व्यक्ति को गले लगाने से। ६ दैनिक प्रयोग की वस्तुओं का सहयोगी प्रयोग करते रहने से जैसे : टाइपराइटर, किताबें, पैन, मशीनें, औजार तथा अन्य, रेस्टोरेंट टैलिफोन, व्यायामशाला, स्नानागार, स्वीमिंग पुल तथा भोजन के बर्तन। ७. साथ-साथ काम करने से : किसी आफिस, वर्कशाप या कारखाने में साथ-साथ काम करने या उपकरणों का मिलकर प्रयोग करते रहने से। ८. साथ-साथ खाने से : संक्रमित व्यक्ति के साथ खाने-पीने तथा प्लेट, गिलास या अन्य बर्तनों का मिलकर उपयोग करने से नहीं फैलता। ९. गुसलखाने/स्नानागार या पाखाने का सहयोग प्रयोग करने से : टायलट सीट या वाश बेसिन को मिलकर इस्तेमाल करने से रोग नहीं फैलता। १० खांसी या छिंकने से। ११. हवा द्वारा भी यह रोग नहीं फैलता। १२. एक दूसरे के वस्त्रों को पहनने से यह रोग नहीं फैलता। १३. तरण-ताल में तैरने से यह संक्रामण रोग नहीं फैलता।

*(शेष अगले अंक में)*

## An Appeal to Senior Life Members!

Due to the mounting cost of production of *The Nursing Journal of India*, it has become very difficult to bring it out regularly without collecting some additional resources from the members of TNAI and others. As per the decision of the Council and Executive of TNAI, all Life Members having their membership for ten years or more are requested to send Rs. 50 annually towards *NJI* if they want the continuity of supply of the *Journal*. This decision has been taken under extreme compulsion and it is hoped that the senior Life Members of the Association would come forward with their contribution in the interest of continuation of the old tradition of the *Journal*. All Remittances by Demand Draft/Money Order may be in the name of 'The Trained Nurses' Association of India', L-17, Green Park, New Delhi - 110016.

**Secretary-General, TNAI**